

Original Article

भोजपुर जिला में जनसंख्या का व्यावसायिक संरचना एवं ग्रामीण विकास : एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. अरुण कुमार

माता सुशीला इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन सैयदबरही, हिलसा नालन्दा

Email: arunkumar1747497@gmail.com

Manuscript ID:

शोध सार

JRD -2025-171045

ISSN: 2230-9578

Volume 17

Issue 10

Pp. 211-214

October. 2025

Submitted: 20 Sept. 2025

Revised: 30 Sept. 2025

Accepted: 15 Oct. 2025

Published: 31 Oct. 2025

किसी भी क्षेत्र के मानव संसाधन विकास का सही आकलन के लिए व्यावसायिक संरचना का अध्ययन किया जाता है। इससे संबंधित क्षेत्र का सामाजिक और राजनैतिक स्थिति की जानकारी होती है। साथ ही मानव मानव संसाधन के नियोजन में सहायक होता है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या को व्यवसाय में संलग्न रहने की एवं आर्थिक जीवन जीने की कार्यशाला के रूप में जाना जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रदेश की आर्थिक स्थिति कृषि या उससे संबंधित उद्योगों पर आधारित है। अथवा अन्य रोजगारों पर यह प्रदेश की आर्थिक उन्नति और आर्थिक नीति को भी दिशा प्रदान करता है। 1981 ई के जनगणना के अनुसार कर्मियों को तीन भागों में विभक्त किया गया है। मुख्य कर्मी, अल्प कर्मी, और गैर कर्मी। पुनः मुख्य कर्मी का चार भागों में बांटा गया है। (क) काश्तकार (ख) कृषि मजदूर (ग) पारिवारिक उद्योग में संलग्न कर्मी (घ) अन्य कर्मी।

उपरोक्त सभी प्रकार के कर्मी मिलकर अध्ययन क्षेत्र का विकास की दशा और दिशा सुनिश्चित करते हैं।

शब्द कुंजिका: मानव संसाधन, व्यावसायिक संरचना, आर्थिक स्थिति, उद्योग, रोजगार इत्यादि।

परिचय:

ग्रामीण विकास में मानव संसाधन का महत्वपूर्ण भूमिका है। मानव विभिन्न व्यवसायों में संलग्न होकर अपना जीवन यापन एवं विकास का इतिहास गढ़ता है। मनुष्य कृषक, कृषि मजदूर, उद्योग में संलग्न कर्मी और अन्य कर्मी के रूप में अपने कार्यों का निष्पादन करता है। ये उत्पादक और उपभोक्ता के रूप में विकास में शरीक होता है। व्यावसायिक संरचना, सामाजिक, आर्थिक विकास की जानकारी के अलावा मानव संसाधन के नियोजन में सहायक होता है। व्यावसायिक संरचना के अंतर्गत जनसंख्या के व्यवसाय में संलग्न रहने एवं आर्थिक जीवन के कार्यशाला के रूप में जाना जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रदेश की आर्थिक स्थिति कृषि और उससे संबंधित उद्योग एवं अन्य रोजगार पर ही प्रदेश के आर्थिक उन्नति एवं आर्थिक नीति की दिशा निर्धारित होता है। व्यावसायिक संरचना के अंतर्गत लोगों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से भागीदारी होती है इसके अंतर्गत केवल काम करने ही वाले नहीं बल्कि कार्य में प्रभावी पर्यवेक्षक एवं निर्देशक को भी शामिल किया जाता है। इसके अंतर्गत कृषि, पारिवारिक उद्योग एवं अन्य आर्थिक क्रिया कलाप में अंशकालिक सहयोग तथा अवैतनिक काम करने वाले लोगों को भी शामिल किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

(क) भोजपुर जिला में ग्रामीण जनसंख्या का अध्ययन करना।

(ख) भोजपुर जिला के ग्रामीण क्षेत्र के मानव संसाधन के व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करना।

(ग) भोजपुर जिला के कृषक, कृषि मजदूर अन्यकर्मी एवं घरेलू उद्योगों में संलग्न कर्मी का अध्ययन करना।

(घ) भोजपुर जिला के व्यावसायिक संरचना के वहाँ के ग्रामीण विकास के प्रभाव का अध्ययन करना।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

Address for correspondence:

डॉ. अरुण कुमार, माता सुशीला इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन सैयदबरही, हिलसा नालन्दा

How to cite this article:

कुमार, . अरुण . (2025). भोजपुर जिला में जनसंख्या का व्यावसायिक संरचना एवं ग्रामीण विकास : एक भौगोलिक विश्लेषण. *Journal of Research and Development*, 17(10), 211–214.

<https://doi.org/10.5281/zenodo.17656851>



Quick Response Code:



Website:
<https://jdrvrb.org/>

DOI:
10.5281/zenodo.17656851

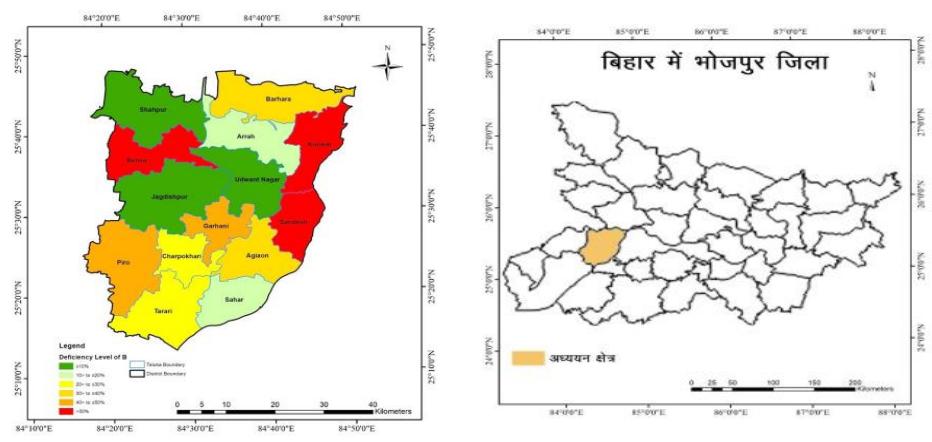


विधितंत्र/अध्ययन विधि

वर्तमान शोधकार्य आंकड़ों का संकलन में द्वितीय आंकड़े चयन विधि का उपयोग किया गया है। सेन्सस रिपोर्ट, जनगणना प्रतिवेदना से आंकड़ा प्राप्त किया गया है। आंकड़े को सांख्यिकी विधि में विश्लेषण किया गया है। तत्पश्चात उससे आरेख तथा मानचित्र तैयार किया गया है। इसमें अनेक शोध कार्यों और पत्र-पत्रिकाओं का भी सहायता लिया गया है।

इस प्रकार शोधपत्र को कार्यरूप दिया गया है।

बिहार राज्य के भोजपुर जिला का अध्ययन क्षेत्र का मानचित्रण



Map- 01 बिहार राज्य के भोजपुर जिला का अध्ययन क्षेत्र का मानचित्रण

अध्ययन क्षेत्र-

वर्तमान भोजपुर जिला दक्षिणी गंगा के मैदान अर्थात् दक्षिण बिहार में स्थित है। यह इसका विस्तार 25°10'0" उत्तरी अक्षांश से 25°40'0" उत्तरी अक्षांश के बीच तथा 83°04'0" पूर्वी देशांतर से 84°04'0" पूर्वी देशांतर के बीच है। इस जिला के उत्तर में गंगा नदी, दक्षिण में रोहतास जिला पूर्व में सोन नदी तथा पश्चिम में बक्सर जिला है। इसका कुल भौगोलिक विस्तार क्षेत्रफल 2395 किलोमीटर है, और 2011 के जनगणना के अनुसार भोजपुर जिला की कुल जनसंख्या 27 लाख 20 हजार एक सौ पचपन है। यहां की कुल ग्रामीण आबादी 23 लाख 38 हजार 546 है जो कुल जनसंख्या का 85.71 प्रतिशत है। इस जिला में तीन अनुमण्डल तथा चौदह प्रखंड हैं और भोजपुर जिला का मुख्यालय आरा है, जो जिला का मुख्य नगर भी है।

व्यावसायिक संरचना-

व्यावसायिक संरचना को उत्पादक कार्यकलाप के रूप में परिभाषित किया जाता है, कार्यों में शारीरिक एवं मानसिक रूप से भागीदारी हो सकती है। इसके अंतर्गत केवल काम करने वाले ही नहीं, बल्कि इसमें कार्य में प्रभावी पर्यवेक्षक एवं निर्देशक को भी सम्मिलित किया जाता है। इसके अन्तर्गत खेती, पारिवारिक उद्योग एवं अन्य आर्थिक कार्यकलाप में अंशकालिक सहयोग या अवैतनिक कार्य को भी सम्मिलित किया जाता है। काम करने वाले लोगों को कर्मी कहा जाता है। 1971 के जनगणना के अनुसार कर्मियों को 9 भागों में बांटा गया है, परंतु 1981 ई० के जनगणना के अनुसार इन्हें पुनः भागों में बांटा गया है-

(क) मुख्य कर्मी (ख) अल्प कर्मी (ग) गैर कर्मी

(क) मुख्य कर्मी- इसके अन्तर्गत ऐसे कर्मी आते हैं, जो साल में 183 दिनों से अधिक दिन काम करते हैं। ये साल के अधिकतर दिन काम में संलग्न रहते हैं। कम से कम 183 दिन काम की गांरटी इनके साथ है। ऐसी स्थिति में उन्हें मुख्य श्रमिक या मुख्य कर्मी कहा जाता है।

(ख) अल्प कर्मी- इसके अन्तर्गत वैसे श्रमिकों या कर्मी को सम्मिलित किया जाता है, जिनके साल में 183 दिनों से कम दिन काम मिलता है।

(ग) गैर कर्मी- कार्य से इतर अर्थात् इससे हटकर लोग कार्यालय, शिक्षण संस्थान, व्यापार, वाणिज्य एवं अन्य कार्यों में संलग्न हैं। वैसे लोगों को गैर कर्मी के रूप में संबोधित किया जाता है। इन्हें अन्य कर्मी भी कहा जाता है। तृतीय कार्यकलाप में संलग्न लोग में सुधार किया जाता है।

मुख्य कर्मी को चार भागों में बांटा जाता है-

(क) काश्तकार (ख) कृषि मजदूर (ग) पारिवारिक उद्योग में संलग्न लोग और (घ) अन्य कर्मी।

(क) काश्तकार-

काश्तकार के अन्तर्गत वैसे लोगों को शामिल किया जाता है, जो भूमि का मालिक होते हैं। ये कृषि मजदूरों के साथ मिलकर खेतों में काम भी करते हैं, साथ ही फसलों के उत्पादन के लिए बीज, खाद, कृषियंत्र सिंचाई की व्यवस्था इत्यादि का प्रबंधन भी करते हैं।

फसलों से होने वाला लाभ तथा हानि का प्रभाव भी कास्टकारों पर ही पड़ता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कास्टकार मौलिक रूप से दो व्यक्तियों हैं। जिसमें भू-स्वामित्व प्रदान किया जाता है। हमारे देश में कास्टकारी व्यवस्था अर्थात् भू-स्वामित्व का व्यवस्था तीन स्तरीय स्वामी के रूप में है। प्रथम कृषक, द्वितीय किरायेदार कृषक और तृतीय पट्टेदार या बटाईदार कृषक। भोजपुर जिला में तीनों प्रकार के भू-स्वामी पाये जाते हैं। परंतु कुछ कानूनी व्यवधान के कारण लिखित प्रमाण नहीं मिलता, क्योंकि स्वामित्व की द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी में वस्तुतः स्वामित्व कृषि मजदूर का नहीं होता वरण वे भूमि पर कृषि करने और वास्तविक भू-स्वामी के साथ उत्पादन में बटाई के लिए अधिकृत होते हैं। इसका अभिप्राय है कि वे कृषि श्रमिक हैं, अर्थात् ये न कृषक हैं और न तो बटाईदार फिर भी ये लोग कृषि पर ही निर्भर हैं।

तालिका – 01

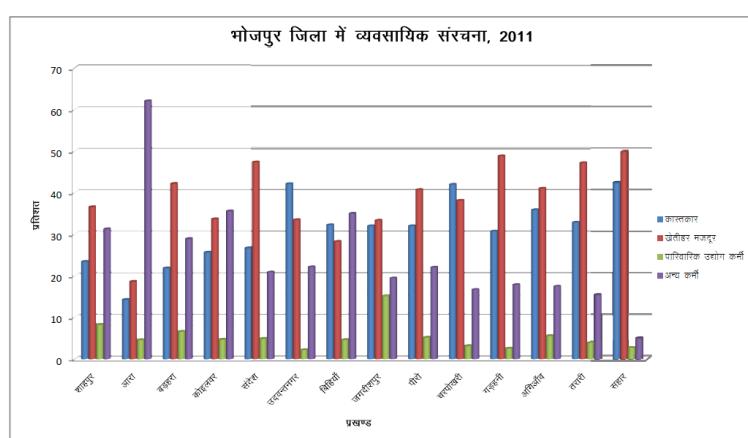
भोजपुर जिला में व्यवसायिक संरचना, 2011

क्रम सं	प्रखण्ड	कुल अवादी	कुल कर्मी	कास्टकार	खेतिहार मजदूर	पारिवारिक उद्योगमें संलग्न कर्मी	अन्य कर्मी
1.	शाहपुर	212253	35126	8265(23.53)	12893 (36.70)	2939 (8.37)	11021 (31.38)
2.	आरा	462618	72894	13363(14.3)	17408 (18.74)	4337 (4.67)	57786 (62.21)
3.	बड़हरा	240636	39266	8626 (21.97)	16618 (42.32)	2623(6.68)	11399 (29.03)
4.	कोहलवर	202175	41681	10733 (25.75)	14082 (33.79)	1992(4.78)	14874 (35.69)
5.	संदेश	109712	20895	5601 (26.81)	9893(47.34)	1033 (4.94)	4365 (20.89)
6.	उदवन्त नगर	157809	30298	12763 (42.12)	10144 (33.48)	679 (2.24)	6712 (22.15)
7.	बिहायां	178429	29564	9375 (32.25)	8214 (28.26)	1355(4.66)	10177 (35.00)
8.	जगदीशपुर	263959	50669	19096 (32.00)	19892 (33.34)	9069 (5.20)	11612 (19.46)
9.	पीरो	254911	42387	13569 (32.01)	17255(40.71)	2213 (5.22)	9350 (22.06)
10.	चरपोखरी	101363	17695	7427 (41.97)	6744(38.11)	567 (3.20)	2957(16.71)
11.	गडहनी	103262	21826	6707 (30.73)	10656 (48.82)	567 (2.60)	3896 (17.85)
12.	अगिआंव	148373	34795	12477 (35.86)	14277 (41.03)	1956 (3.62)	6085(17.49)
13.	तरारी	182631	33502	11004 (32.85)	15997 (47.15)	1321 (3.94)	5180(15.46)
14.	सहार	110276	20460	8694 (42.49)	10201 (49.86)	545 (2.66)	1020(4.99)
	भोजपुर जिला	2331440	519561	147700(28.43)	189274 36.43)	31196 (6.00)	151391(29.14)

स्रोत- जिला जनगणना प्रतिवेदन 2011 एवं कम्प्यूटर

तालिका 01 में 2011 के जनगणना के अनुसार भोजपुर जिला के व्यवसायिक संरचना को प्रदर्शित किया गया है।

भोजपुर जिला में व्यवसायिक संरचना, 2011



Map-02 भोजपुर जिला में व्यवसायिक संरचना 2011

कास्तकार-

2011 के जनगणना के आधार पर भोजपुर जिला में कास्तकार की आबादी 147700 (28.43) प्रतिशत है। जिला के औसत कास्तकारों की संख्या (28.43) प्रतिशत से अधिक कास्तकारों की आबादी वाली प्रखण्डों में सहार (42.49 प्रतिशत), उदवन्तनगर (42.12 प्रतिशत), चरपोखरी (41.97 प्रतिशत), अगिआंव (35.86 प्रतिशत), तरारी (32.85 प्रतिशत), बिहियां (32.25 प्रतिशत), पीरो (32.01 प्रतिशत), जगदीशपुर (32.00 प्रतिशत), गडहनी (30.73प्रतिशत) है। इनके अलावे शेष प्रखण्ड संदेश, कोईलवर, शाहपुर एवं आरा में जिला के औसत कास्तकारों की संख्या (28.43 प्रतिशत) से कम कास्तकार हैं। आरा में कास्तकारों की जनसंख्या सबसे कम मात्रा (14.39 प्रतिशत) है।

खेतीहर मजदूर-

तालिका 01 में भोजपुर जिला में खेती मजदूर को प्रदर्शित किया गया है। जिला के औसत कृषि मजदूर (36.43 प्रतिशत) है। जिला में सर्वाधिक कृषि मजदूर सहार प्रखण्ड में (47.86 प्रतिशत) है। इसके उपरांत गडहनी (48.82 प्रतिशत), तरारी (47.75 प्रतिशत), संदेश (47.34 प्रतिशत), बडहरा (42.32 प्रतिशत,), अगिआंव (41.03 प्रतिशत), पीरो (40.71 प्रतिशत), चरपोखरी(38.11 प्रतिशत), शाहपुर (36.70 प्रतिशत) इनके अलावे कोईलवर, उदवन्तनगर, जगदीशपुर एवं आरा प्रखण्ड में भोजपुर जिला के औसत खेतीहर मजदूर के (36.43 प्रतिशत) से कम हैं। सबसे कम खेतीहर मजदूर आरा प्रखण्ड में (18.74 प्रतिशत) है।

पारिवारिक उद्योग में संलग्न कर्मी-

तालिका 01 में पारिवारिक उद्योग में संलग्न कर्मियों को प्रदर्शित किया गया है। इसके अनुसार भोजपुर जिला में औसत पारिवारिक उद्योग में संलग्न कर्मी (6.00 प्रतिशत) है। भोजपुर जिला में पारिवारिक उद्योग में संलग्न कर्मियों की संख्या सर्वाधिक संख्या जगदीशपुर प्रखण्ड में (15.20 प्रतिशत) है। इसके उपरान्त शाहपुर (8.37 प्रतिशत), बडहरा (6.68 प्रतिशत) और शेष प्रखण्डों आरा, कोईलवर, संदेश, बिहियां, पीरो, चरपोखरी, गडहनी, अगिआंव, सहार तथा उदवन्तनगर में सबसे कम (2.24 प्रतिशत) पारिवारिक उद्योग में संलग्न कर्मी हैं।

अन्य कर्मी-

तालिका 01 में 2011 के जनगणना के अनुसार भोजपुर जिला में अन्य कर्मियों को प्रदर्शित किया गया है। इसके अनुसार इस जिला में औसत अन्य कर्मी (29.14 प्रतिशत) है। यहां सर्वाधिक अन्य कर्मी आरा प्रखण्ड में (62.21 प्रतिशत) है। इसके उपरांत कोईलवर (35.69 प्रतिशत), बिहियां (35.00 प्रतिशत), शाहपुर (31.38 प्रतिशत) और शेष प्रखण्ड में बडहरा, संदेश, उदवन्तनगर, बिहियां जगदीशपुर, पीरो, गडहनी, चरपोखरी, अगिआंव एवं तरारी में इस जिला के औसत अन्य कर्मी (29.14 प्रतिशत) से कम हैं। इस जिला में सबसे कम अन्य कर्मी सहार प्रखण्ड में (4.99 प्रतिशत) हैं।

संदर्भ सूची

1. मेमोरिया सी.बी.एवं सिसौदिया,एम.एस.(2009)" आर्थिक भूगोल के मूल तत्व" एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन, आगरा पृ सं. 55।
2. चांदना आर.सी.(2014) "जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, पृ.140।
3. क्लार्क, जे 0 (1972), "पॉपुलेशन ज्योग्राफी" परगामाँन प्रेस ऑक्सफोर्ड पृ. 435।
4. नेगी बी.एस.(2001), "जनसंख्या भूगोल" राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.362।
5. चांदना आर.सी.(2014), "जनसंख्या भूगोल" कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना, पृ. 298।
6. ट्रिवार्था,जी.टी.,(1953), " द केस ऑफ पॉपुलेशन ज्योग्राफी, एनाल्स ऑफ द एशोशिएसन ऑफ द अमेरिकन ज्योग्राफर्स।
7. श्री याक , एच.एस. (1976), द मेथड्स एण्ड मेट्रियल्स ऑफ डेमोग्राफी एकेडमिक प्रेस, न्यूयार्क।
8. चांदना आर.सी. (2014), " जनसंख्या भूगोल" कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना पृ.391।
9. सिंह जशवीर एण्ड डिल्लो, एस.एस.(1994), एग्रीकल्चरल ज्योग्राफी, टाटा मैग्नो हिल पब्लिकेशन कम्पनी, नई दिल्ली।
10. सिंह जशवीर एण्ड डिल्लो एस.एस.(1994) एग्रीकल्चरल ज्योग्राफी टाटा मैग्नोहिल पब्लिकेशन कम्पनी नई दिल्ली।